२

रूप की बीमारी

[जुलाई १९४०]

पात्र-परिचय

१—सोमेश्वरचन्द्र ।

[नगर के धनी सेठ हैं । इनके पास पूर्वजों की अर्जित लाखों की संपत्ति है । इनकी आयु लगभग ५० वर्ष की है । इनके एक ही लड़का है ; उसका नाम है रूपचन्द्र । इसे वे बहुत प्यार करते हैं । एक मात्र यही उनके बुढ़ापे का सहारा है । वे उसके लिए सब कुछ कर सकते हैं । इससे बढ़ कर वे संसार में किसी चीज़ को नहीं समझते । पुत्र-प्रेम के संबन्ध में शायद वे ईसा की शताब्दियों में दशरथ के नवीन संस्करण हैं ।]

२—रूपचन्द्र ।

[श्री सोमेश्वरचन्द्र के पुत्र । आधुनिक सभ्यता के पूरे मानने वाले हैं । वे आज कल एम० ए० के विद्यार्थी हैं । अपने पिता के प्रेम और औदार्य से पूर्ण लाभ उठाने की प्रतिभा उनमें है । आयु लगभग २४ वर्ष होगी ।]

३—डॉक्टर दासगुप्त ।

[इनका पूरा नाम मुझे नहीं मालूम । ये लण्डन के एल० आर० सी० पी० हैं । मरीज़ों से बात करने में विशेष दिलचस्पी लेते हैं । उन्हें बीमारियों को अच्छा करने का तजुरबा भी ख़ूब है । बंगाली होने से भाषा का उच्चारण कभी-कभी वे बड़े हास्योत्पादक ढङ्ग से करते हैं,

लेकिन इसमें उन बेचारे का क़ुसूर ही क्या ? नगर में लोगों का उन पर पूर्ण विश्वास है। आयु लगभग ४५ वर्ष होगी। बन्द कॉलर का कोट, चश्मा और हाथ में छड़ी उनकी विशेषता है।]

४--डॉ० कपूर।

[कपूर इनका असली नाम है और 'सरनेम' भी कपूर है। इसलिए लोग कपूर दो बार न कह कर एक ही बार कहते हैं, यों शैतान लड़के तीन या चार बार कपूर कह कर इनको चिढ़ाते हैं। ये बिलकुल अप-टु-डेट हैं। क्लीन शेव। सूट और टाई के रङ्ग का सामञ्जस्य इनकी रुचि है। हिन्दुस्तानी में काफ़ी अंगरेज़ी बोलते हैं। ये भी मशहूर डॉक्टर हैं। उमर यों बहुत नहीं है, यही ४० के लगभग होगी।

५—जगदीश।

६—हरभजन।

[ये दोनों श्री० सोमेश्वरचन्द्र के नौकर हैं। दोनों बड़े मेहनती हैं, लेकिन अपने मालिक को प्रसन्न नहीं कर पाते। बड़ी सञ्जीदगी के साथ काम करते हैं। दोनों की उमर में कोई ख़ास अन्तर नहीं है। दोनों लगभग ३०-३५ वर्ष के होंगे। हिन्दुओं के घर की परंपरागत वेशभूषा ही उनकी वेषभूषा है। हाँ, धनी मालिक के नौकर होने के कारण उनके कपड़े अपेक्षाकृत अधिक साफ़ हैं।]

स्थान—इलाहाबाद का जॉर्ज टाउन।

समय—१५ सितम्बर, १९३८।

इस नाटक का सर्व प्रथम अभिनय प्रयाग विश्व-विद्यालय के सर पी० सी० बैनर्जी हॉस्टल के विद्यार्थियों द्वारा सन् १९४० में श्री एम० डी० ममगेन और श्री एल० एम० थपलियाल के निर्देशन में हुआ। भूमिका इस प्रकार थी :

१—रूपचन्द्र	...	श्री जी० सी० जोशी
२—सोमेश्वर	...	श्री जे० एन० स्वामी
३—डा० दासगुप्त	.	श्री पी० सी० रस्तोगी
४—डा० कपूर	...	श्री डी० आर० गुप्त
५—जगदीश	...	श्री सी० एस० राघवन्
६—हरभजन	...	श्री आई० बी० सिंह

सोमेश्वरचन्द्र के मकान का भीतरी भाग। कमरा सजा हुआ है। दीवारों पर चित्र लगे हुए हैं। सामने शङ्कर-पार्वती का एक बहुत बड़ा चित्र है। कमरे के बीचोंबीच एक ख़ूबसूरत पलँग बिछा हुआ है जिसमें आगे-पीछे बड़े शीशे लगे हुए हैं। पलँग पर तकिये के सहारे रूपचन्द्र आराम से टिक कर बैठा है। वह कमर तक रेशमी चादर ओढ़े हुए है। वह बीमार है, उसकी मुख-मुद्रा से मलीनता टपक रही है।

सिरहाने एक छोटी टेबुल है जिस पर दवाइयाँ, दवा पीने का ग्लास एक टाइमपीस घड़ी और थर्मामीटर रखा है। पास की दूसरी टेबुल पर कुछ फल रखे हैं। मेंटलपीस पर फूलदान तथा मिट्टी के ख़ूबसूरत खिलौने सजे हुए हैं। दोनों कोनों पर महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के बस्ट सुशोभित हैं। उनकी विरुद्ध दिशा में लेनिन और स्टेलिन के चित्र हैं। पलंग के समीप तीन-चार कुर्सियाँ पड़ी हैं। कमरे में अगरबत्ती की हल्की सुगन्धि महक रही है।

रूपचन्द्र के पिता श्री० सोमेश्वर चिन्तित मुद्रा में कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहल रहे हैं। पुत्र की बीमारी ने उन्हें बहुत अव्यवस्थित बना दिया है। वे बात-बात पर झल्ला भी उठते हैं। अपने

प्यारे पुत्र की बीमारी बेचारे पिता के जीवन का सब से बड़ा अभिशाप होकर जैसे कमरे के वातावरण का निर्माण कर रही है। इस समय दिन के तीन बजे हुए हैं।

सोमेश्वर चन्द्र—[कमरे में टहलते हुए] बुढापे में भी चिन्ताएँ पीछा नहीं छोड़तीं, सोचता था—तुम्हारी पढ़ाई के बाद सारा काम तुम्हें सौंप कर आराम से शङ्कर का भजन करूँगा, लेकिन पूर्वजन्म के पाप कहाँ जायेंगे ? चिन्ता-चिन्ता-चिन्ता ! रोज़ कोई न कोई चिन्ता सिर पर सवार है। आज सिर में दर्द तो कल पेट में दर्द । [ठहर कर] तुम बीमार हो गये ! रूप, तुम क्या समझो मेरे दिल का क्या हाल हो रहा है ? कितनी मुश्किल से तुम्हें इतना बड़ा किया है। आँखों के तारे की तरह तुम्हें बचाया है। तुम्हारी माँ के जाने के बाद मैं तो और भी कमज़ोर हो गया, जैसे हाथ-पैर टूट गये। मैं अकेला आदमी। रोज़गार भी सँभालूँ और तुम्हें भी देखूँ ? और क्यों न देखूँ ? तुम्हारी माँ जैसे मेरे दिल में बैठ कर बार-बार कह रही है—मेरे रूप को अच्छा रखना, मेरे रूप को अच्छा रखना···। रक्खूँगा देवी, रक्खूँगा। इधर तुम बीमार हो गये ! अब मैं क्या करूँ ! रूप, तुम अच्छे हो जाओ—जल्द अच्छे हो जाओ। मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ।···[गहरी साँस लेकर] आज तुम्हारा टेम्प-रेचर कितना था रूप ? [थर्मामीटर उठाता है।]

रूपचन्द्र—[धीमे स्वर से] नाइण्टी-नाइन प्वाइण्ट सिक्स।

सो०—[दुहरा कर अशान्ति से] नाइण्टी-नाइन प्वाइण्ट

सिक्स ! इन कम्बख़्त डॉक्टरों की जेब में रुपये भरा करूँ और मेरे रूप की तबीयत ठिकाने पर न आये ! इन डॉक्टरों के लिए कोई सज़ा भी तो क़ानून ने नहीं बनाई। रोगी की ज़िन्दगी के साथ रुपये का सौदा करते हैं। ये डॉक्टर नहीं, बीमारी के वकील हैं। रुपये खा कर बीमार को भी खा डालने का हुनर सीखे हुए हैं। रोज़गारी कहीं के ! अगर यह दलाली करते हैं तो मुझसे करें, मेरे रूप के पीछे क्यों पड़े हुए हैं। उसे अच्छा कर दें, फिर मुझसे निबट लें ! [टेबुल पर फलों को देख कर] रूप, आज तुमने फल-वल कुछ खाये ? ये टेबुल पर कैसे हैं ? [पुकार कर] जगदीश ! जगदीश !!

जग०—[बाहर से] आया हुज़ूर ! [जगदीश का प्रवेश।]

सो०—तुम बाज़ार से फल वल लाये थे ?

जग०—सरकार, लाया था।

सो०—ये फल कैसे हैं ? [टेबुल पर रखे हुए फलों की ओर संकेत।]

जग०—सरकार, ये कल के हैं।

सो०—ये रूप को क्यों नहीं खिलाये गये ?

रूप०—बाबू जी, मुझसे खाये ही नहीं गये।

सो०—[झल्ला कर] खाये कैसे जायँ ? बासे और सड़े फल भी कहीं खाये जा सकते हैं ! बाज़ार की सब से सड़ी चीज़ मेरे यहाँ लाई जायगी। इन कम्बख़्त नौकरों से भी कहीं कोई अच्छा काम हुआ है ? गोया मेरे घर के पैसे बाज़ार में फेंकने के लिए हैं ! [एक फल को हाथ

में ले कर] ये देखो आज नहीं तो कल ज़रूर सड़ जायँगे। इन्हें कोई खा कर और बीमार पड़े ! ठहरो, मैं यह सब तुम्हारी तनख्वाह में से काटूँगा। आयन्दा देखता हूँ कि तुम ठीक फल लाते हो या नहीं। आज बाज़ार से ताज़े फल लाये थे ?

जग०—लाया था सरकार ?

सो०—क्या-क्या लाये थे ?

जग०—सेव, सन्तरे, अनार, अङ्गूर।

सो०—और मोसम्मी नहीं लाये ?

जग०—सरकार, मिली ही नहीं।

सो०—[व्यंग से] मिली ही नहीं ! मिले कैसे ? जब आप लोग मेहनत करें तब न मिले ? बेगार जैसा काम ! मिली ही नहीं—तुमने खोज की थी ?

जग०—सरकार, बहुत खोजी, मिली ही नहीं।

सो०—कहाँ खोजी ?

जग०—कटरे में।

सो०—(दुहरा कर) कटरे में ! चौक तो जा ही नहीं सकते ! जनाब के पैरों में दर्द होता है। चौक जाने में पैर घिस जायँगे। आप लोग हैं किस मर्ज़ की दवा ? चलिये बैठिए घर पर। तमाखू पीजिए। मैं जाऊँगा फल लेने।

जग०—सरकार, दवा भी लानी थी, इसलिए चौक नहीं जा सका।

सो०—[चिढ़ कर] अरे, तो क्या तुम्हीं अकेले घर में नौकर

हो ? हरभजन से कह दिया होता। वह सुअर कहाँ मर गया था ? वह दवा ले आता। कहाँ है हरभजन ?

जग०—सरकार, फल धो रहा है।

सो०—बुलाओ उसे। [जगदीश जाता है।] इन बेईमानों से सौ बार समझा कर कहो, लेकिन इन लोगों की अक्ल मे बात समाती ही नहीं। कहाँ कहाँ के नौकर मेरे यहाँ इकट्ठे हुए हैं! गोया मेरा मकान यतीमख़ाना है। खायेंगे भर पेट, लेकिन काम ? काम, रत्ती भर भी नहीं।

रूप०—[शान्ति से] जाने दीजिए बाबू जी।

सो०—तुम्हें तकलीफ जो होती है बेटा। एक रोज़ की बात हो तो जाने भी दूँ। रोजबरोज ये लोग सिर पर चढते चले जाते हैं। गोया हम लोगों का सर इन्हीं लोगों से बकझक करने के लिए···[जगदीश हरभजन को लेकर आता है।] क्यो रे हरभजन, क्या कर रहा था ?

हर०—सरकार, फल धो रहा था।

सो०—दस घटे तक फल ही धोये जायँगे ?

हर०—सरकार, छोटे सरकार के पैर मींज कर अभी तो गया था।

सो०—अभी तो गया था! बड़े भोले हैं जनाब! जैसे इन से कोई क़ुसूर हो ही नहीं सकता! फल कैसे धो रहे हो ?

हर०—सरकार, बहुत अच्छी तरह से धो रहा हूँ।

सो०—[पुनः दुहरा कर] बहुत अच्छी तरह से धो रहा हूँ। गधे कहीं के। मैं पूछता हूँ पानी में परमेगनेट पोटास मिलाया है ?

हर०—हाँ, सरकार, रोज़ 'परमेनग पुटास' मिलाता हूँ। आज भी मिलाया है।

सो०—ख़ाक मिलाया है। मैं तो इन लोगों से हार मान गया। जाओ, फल ठीक करो। [हरभजन जाता है।] जगदीश, अभी डॉक्टर नहीं आये?

जग०—नहीं सरकार।

सो०—अभी क्यों आयेंगे? रास्ता देखिए, इन्तज़ार कीजिए, दस घण्टों तक। बिना दस बार नौकर गये, नाज़ ही नहीं उठते। मैं तो मरा जा रहा हूँ इन डॉक्टरों के मारे। गोया लाट साहब हैं। एम० बी० बी० एस० क्या हो गये हैं, जैसे दुनिया भर के चचा हैं। दवा से फायदा हो चाहे न हो, फीस लेंगे और बेचारे रोगी को पीस लेंगे। [ठहर कर] रूप, इन डॉक्टरों ने तुम्हें बहुत तङ्ग किया लेकिन बतलाओ मैं क्या करूँ? तुम इस बार अच्छे हो जाओ, फिर देख लूँगा इन सारे डॉक्टरों को। [फिर ठहर कर] और तुम उदास रहते हो तो जैसे मेरा रोयाँ रोयाँ दुखी हो जाता है। तुम हँसा करो, ज़रा ख़ुश रहा करो। फिर देख लूँगा एक-एक डॉक्टर को। तुम ख़ुश तो हो जाओ। [हँसने का अभिनय कर] हाँ, हाँ, ज़रा हँसो। [रूपचन्द्र मुस्करा देता है।] वाह-वाह, क्या कहना। अब तुम बिलकुल अच्छे हो जाओगे। अरे हरभजन, ज़रा फल तो ला!

हर०—[भीतर से] लाया हुज़ूर!

सो०—अरे जल्दी ला। मेरा रूप अब बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा। हरभजन बहुत अच्छे फल धोता है। फलों को धोकर पाव

भर तो गन्दा पानी निकालता है। जगदीश, तुम बाहर बैठो, जैसे ही डॉक्टर आयें, मुझे ख़बर दो। समझे ?

जग०—बहुत अच्छा सरकार ! [जाता है।]

सो०—फल खाने से बहुत फ़ायदा होता है। वह क्या कहलाता है ? विटामिन ! हाँ, विटामिन, क्यों रूप ? [रूप सिर हिलाता है।] मैं तो कुछ जानता नहीं। इन्हीं कम्बख़्त डॉक्टरों ने न जाने क्या क्या खोजकर निकाला है। [हरभजन फल लेकर आता है।] वाह, हरभजन, तू बहुत अच्छे फल धोता है। ला, मैं अपने हाथ से तेरे छोटे सरकार को कुछ खिलाऊँ। [कुर्सी पर बैठ जाते हैं।]

रूप—बाबू जी, खाने की तबीयत नहीं होती।

सो०—नहीं रूप, देखो हरभजन ने कितने अच्छे फल धोये हैं ! मेरी तक खाने की तबीयत होती है। अच्छा, ये लो अपने हाथ से तुम्हें अङ्गूर खिलाऊँ। देखो, ये अङ्गूर की कैसी छोटी छोटी गोलियाँ हैं ! [रूप को अपने हाथ से अङ्गूर खिलाते हैं। प्रसन्नता से] एक बार बड़े दिनों में मैंने कलक्टर साहब को डाली दी। डाली में बड़े अङ्गूरों को देख को कलक्टर साहब के मुँह में पानी आ गया। झट से तीन चार अङ्गूरों को मुँह में डालते हुए साहब ने कहा—वेल सेठ साहब, तुम गोली में हामरा शराब लाया है ! [दोनों हँसते हैं। हरभजन भी मुस्कराता है। हरभजन से] हरभजन, तुम बाहर बैठो। डॉक्टर साहब आयें तो ख़बर देना। अच्छा ? तुम बहुत अच्छा फल धोते हो। समझे ?

हर०—बहुत अच्छा सरकार ! [बाहर जाता है।]

सो०—क्यों रूप, कल से तुम्हारा जी कुछ हलका है?

रूप०—[मलीनता से] नहीं बाबू जी!

सो०—[खड़े होकर] कैसे होगा! हिन्दुस्तानी जिस्म में अंगरेज़ी दवा कितना फायदा कर सकती है? वह तो मन नहीं मानता, नहीं तो वैद्यों को बुलाता। और अगर वैद्य बेवकूफ़ न होते तो इन डॉक्टरों का मुँह भी न देखता। मुँह देख कर सौ बार नहाता।

[हरभजन का प्रवेश।]

हर०—सरकार, डॉक्टर साहब आये हैं!

सो०—कौन डाक्टर?

हर०—डाक्टर दास गुप्ता।

सो०—और डाक्टर कपूर नहीं आये?

हर०—अभी तो नहीं आये सरकार!

सो०—[चिढ़कर] अभी क्यों आयेंगे? अच्छा बुलाओ इन्हीं को।

[हरभजन जाता है।]

सो०—रूप, तुम साफ़-साफ क्यों नहीं कह देते कि इस दवा से फ़ायदा नहीं होता। देख रहा हूँ, दस रोज़ से तुम बीमार हो। तबीयत में दवा से कुछ तो आराम होना चाहिए।

[हरभजन के साथ डॉक्टर दास गुप्ता का प्रवेश।]

सो०—आइये डॉक्टर साहब, आज फिर टेम्परेचर नाइण्टी नाइन प्वाइण्ट सिक्स है!

दास०—[टेबुल पर अपना बैग रखते हुए] की हुआ? धिरे-धिरे

तो नारमाल होगा। हाम बोला जे दावाई ठिक टाइम पर देनेशे शाब ठिक होने शकेगा। [रूप से] तुम दवा पिया ?

रूप०—हाँ, डॉक्टर साहब, आठ बजे और बारह बजे की दो ख़ुराकें तो पी चुका।

सो०—हरभजन, ये घड़ी ठीक मिली है या नहीं ?

हर०—सरकार, अनवरसीटी के घंटे से मिलाई थी।

सो०—यूनीवर्सिटी के घंटे से ! वह घड़ी अक्सर बन्द भी तो हो जाती है। आज शाम को स्टेशन से मिलाकर लाओ, समझे !

हर०—बहुत अच्छा सरकार !

दास०—[अपने कोट से घड़ी निकालकर] नहीं, टाइम ठिक है। तीन आधा बाजता है।

रूप०—कितना, साढ़े तीन ?

दास०—हाँ, येई बात।

रूप०—इस वक्त रोज़ मुझे हरारत बढ़ जाती है।

सो०—हाँ, डॉक्टर साहब, ज़रा मेहरबानी करके देखिए। मेरे रूप को बड़ी तकलीफ है।

दास०—आच्छा, हम अबी टम्परेचर लेते। [थर्मामीटर रूप के मुँह में लगाते हैं।] तूमरा हाथ देखाओ।

[रूप हाथ आगे बढ़ाता है। डा० साहब नाड़ी देखते हैं। आधे मिनट तक निस्तब्धता रहती है। सोमेश्वरचन्द्र कभी रूप और कभी डाक्टर के मुँह की तरफ देखते हैं। आध मिनट बाद डा० साहब थर्मामीटर रूप के मुँह से निकाल कर देखते हैं।]

सो०—[उद्विग्नता से] क्यों डॉक्टर साहब, कितना टेम्परेचर है ?

दास०—[थर्मामीटर को हरभजन के हाथ में देते हुए] खबरदारी से धो लाओ [सोमेश्वर से] जासती नेई । दुइ प्वाइण्ट बाड़ा हय । पाल्श (Pulse) तो ठिक है । वेशी दिन नाहीं लागेगा ।

सो०—डॉक्टर साहब, दस दिन तो हो गये इस फिकर में ।

दास०—शेठ साहब, घाबराने से की होता ? [रूप से] रूप साहब, तूमरा पेट का दरद ?

रूप०—वह तो वैसा ही है । और कुछ बढ़ता नज़र आता है ।

सो०—[रुच्चता से] देखिए डॉक्टर साहब, दस दिन से आप लोग दवा कर रहे हैं । मैं तो फिकर से मरा जा रहा हूँ । कुछ आराम ही नहीं होता ! इधर इनकी पढ़ाई अलग चौपट हो रही है । इसी साल एम० ए० में बैठना है । ऐसी बीमारी में कहीं एम० ए० हो सकता है ? आप लोग मेहरबानी कर के इन्हें जल्द अच्छा कर दें । आप तो देखते हैं, मैं रुपया पानी की तरह बहा रहा हूँ । फिर भी तबियत वैसी की वैसी ।

दास०—डॉक्टर कोपुर आया था ?

हर०—नहीं सरकार, अभी तक तो नहीं आये ?

दास०—अबी जाके बोलाओ ।

हर०—बहुत अच्छा सरकार ! [जाता है ।]

सो०—इसीलिए मैंने दो दो डॉक्टरों को तकलीफ दी कि वे आपस में समझ-बूझ कर दवा करें । [इस भय से कि कहीं डाक्टर साहब को बुरा न लग जावे ।] आप तो अपनी-सी बहुत करते हैं, लेकिन तबीयत

को जाने क्या हो गया कि आप जैसे डॉक्टरों की दवा भी फायदा नहीं पहुँचाती ! मै तो चिन्ता से डाक्टर साहब, आधा हो गया हूँ। चाहता था, रूप की पढाई ख़त्म हो तो इनको काम सौंप कर आराम से शिव शङ्कर का भजन करता लेकिन पूर्व जन्म के पाप कहाँ जायँगे ? चिन्ता-चिन्ता-चिन्ता घर छोडकर ऋषिकेश चला जाऊँ तो सब ठीक हो जाय।

दास०—आप रिशीकेश कैयों जाता ? रूप बाबू आभी ठिक होता।

सो०—नहीं डाक्टर साहब, अब मैं दुनिया से ऊब गया। बाप-दादों की कमाई हुई लाखों रुपये की जायदाद अब मुझसे नहीं सँभलती। दिनभर बकझक करता हूँ, लेकिन कुछ होता नहीं। सँभालें आपके रूप बाबू। मैं अगर जायदाद ख़राब कर दूँ तो ईश्वर के सामने और अपने बाप दादों के सामने क्या मुँह दिखाऊँगा ? अपनी बेवक़ूफी से अगर रुपया बरबाद करूँ तो रूप बाबू का हक़ मारता हूँ। अब तो जितनी जल्दी हो मैं इस दुनिया से उठ जाऊँ तो अच्छा। शिवशङ्कर ! मुझे उठा लो। [शङ्कर जी के चित्र की ओर देख कर हाथ जोडते हैं।]

दास०—अरे, आप कैशी कोथा बोलते ? आप तो वहुत होशियार है। हाजार का लाख तो आप ही किया है। अबी तो आपका उमर बहूत है।

सो०—अजी सब हो चुका। आप मेरे रूप को अच्छा कर दें। आप शहर के मशहूर डॉक्टर हैं, इसलिए आपके हाथ मे रूप को सौंपा है।

[हरभजन के साथ डॉक्टर कपूर का प्रवेश ।]

हर०—सरकार, डॉक्टर साहब रास्ते ही मे मिल गए ।

क०—गुड ईवनिङ्ग सेठ साहब, गुड ईवनिङ्ग डॉक्टर, आइ वाज़ इन दि वे । क्या तबीयत कुछ ज़्यादा ख़राब है ? [रूप की ओर देख कर] गुड ईवनिङ्ग मिस्टर रूप ।

[गुड ईवनिंग का शिष्टाचार ।]

क०—क्यों, क्या तबीयत कुछ ज़्यादा नासाज़ है ?

दास०—नाही, शेठ शाहब घाबराते ।

क०—मिस्टर रूप, यू आर क्वाइट आल राइट । टेम्परेचर लिया ?

दास०—हाँ, दुइठो प्वाइंट जासती राहा । नाइन्टी नाइन प्वाइंट एट् ।

सो०—लेकिन आपकी दवा पीते हुए इस बुख़ार को बढ़ना क्यों चाहिए ?

रूप०—और पेट का दर्द भी कुछ ज़्यादा मालूम होता है ।

क०—हाँ, बढ़ना तो नहीं चाहिए । इसकी दवा दे दी गई थी ।

रूप०—वह दवा चार बजे सुबह की थी । मुझे नींद आ गई थी । वह ख़ुराक मैं पी नहीं सका ।

दास०—आछा-आछा, जागाना ठिक नेई था । शो तो ठिक राहा ।

क०—लेकिन जागने पर तो मेडिसिन लेनी चाहिए थी । मेडीसिन निगलेक्टेड, इम्प्रूवमेण्ट निगलेक्टेड ।

सो०—ख़ैर, डाक्टर कपूर, अब दवा दे दीजिए।

क०—आप फिज़ूल घबराते हैं। आपके घबराने से रोगी की तबीयत और भी ख़राब होगी।

सो०—तो आप जल्दी से जल्दी इसे अच्छा कर दें।

क०—आप इतमीनान रखिए। हैव फेथ आन अस। डाक्टर दास गुप्ता को कितना तजरुबा है। एल० आर० सी० पी० हैं। इन्होंने हज़ारों केसेज़ अच्छे किए हैं। शहर की आधी ज़िन्दगी इन्हीं के हाथों में है और मैं भी १२ वर्षों से मरीज़ों को देखता आ रहा हूँ। इनकी तबीयत आज नहीं तो दो तीन दिनों में अच्छी हो जायगी।

सो०—देखिए, जब आप ऐसा कहते हैं तो मुझे इतमीनान होता है।

क०—होना चाहिए। आप चिन्ता कर ख़ुद अपनी तबीयत ख़राब न कर लें! आप ये सब बातें हम लोगों पर छोड़ दीजिए। आप अपना काम देखिए। मैं तो देखता हूँ कि आप पिछले ७-८ दिनों से अपना सारा काम छोड़े हुए बैठे हैं।

सो०—मैंने तो बहुत से ज़रूरी काग़ज़ भी नहीं देखे।

क०—तो फिर उन्हें देखिए। अपना सब काम चलाइए। जब आपने मिस्टर रूप को हम लोगों के सुपुर्द कर दिया है तो अब आप बिलकुल बेफिकिर हो जाइए। हम लोग कुछ बाक़ी उठा न रखेंगे।

दास०—ठिक बोला, जे हाम लोग बाकी उठाय न राखेंगे।

क०—और फिर मिस्टर रूप की बीमारी भी कोई ऐसी सीरियस

नहीं है। आप अपने काम का इतना हर्ज क्यों करते हैं ? सुना है, आपने दूकान जाना भी छोड़ दिया है।

सो०—हाँ, जाया भी तो नहीं जाता।

क०—नहीं, जाइए अवश्य, दुनिया में तो बीमारियाँ चला ही करती हैं। कोई हमेशा तो तन्दुरुस्त रहा नहीं, कभी न कभी तो बीमार पड़ेगा ही। आप दूकान जाइए, अपना काम देखिए। फिर थोड़ी देर बाद आप आ जाइयेगा।

दास०—हाँ, फिर आने शाकता।

सो०—अच्छा तो ठीक है। अगर मेरा रूप अच्छा रहे तो मैं क्यों इतना परेशान होऊँ।

क०—तो सेठ साहब, परेशान होने की कोई बात नहीं है।

सो०—तो फिर मैं कुछ काग़ज़ देख लूँ ? सात रोज़ से देखने की फ़ुरसत भी नहीं मिली। दलाल लोग यों ही भटक कर चले जाते हैं। कभी यहाँ तक चक्कर लगाते हैं।

क०—आप तो उनसे दूकान पर ही निबट लिया कीजिए।

दास०—हाँ, आप जाने शाकते। हम डॉक्टर कोपूर शे बातें करूँगा।

क०—हाँ, तब तक हम लोग म्युचुअल कसल्टेशन करते हैं। आप अपना काम कीजिए। जिस नतीजे पर पहुँचेंगे आपको बतला देंगे।

सो०—हाँ, डॉक्टर साहब, आप लोग ख़ूब होशियारी से कंस-

ल्टेशन कर लें। मुझे भी इतमीनान हो जायगा। अच्छा, तो मैं जाऊँ ?

क०—हाँ, ज़रूर। आप इतमीनान से अपना काम कीजिए।

दास०—जोरूर, काम तो जोरूर देखने होता भाई।

सो०—अच्छा तो रूप, मैं थोड़ी देर के लिए काम देख आऊँ ? चला जाऊँ ? ये दोनों डॉक्टर तुम्हारे पास हैं।

रूप०—हाँ, बाबू जी, जाइए।

सो०—अच्छा रूप, तो मैं जाता हूँ।

[रूप को देखते हुए सोमेश्वर का प्रस्थान। एक क्षण बाद फिर लौटते हैं।]

सो०—देखिए डॉक्टर साहब, आप लोग ख़ूब ध्यान से कंसल्टेशन कीजिए। मुझे अपने रूप के बारे में पूरा इतमीनान हो जाय।

क०—हम लोग बड़ी सावधानी से कंसल्टेशन करेंगे।

दास०—फारक पाड़ने नेई शाकता।

सो०—अच्छा रूप, मैं अभी आता हूँ। जाऊँ ?

रूप०—जाइए बाबूजी। मेरी तबीयत यों बुरी नहीं है।

सो०—वाह, रूप, जब मैं तुम्हारे मुँह से यह सुनता हूँ तो मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहता। अच्छा, जाता हूँ।

[रूप की ओर देखते हुए सोमेश्वर का प्रस्थान। भीतर से सोमेश्वर की आवाज़—]

अरे हरभजन, ओ हरभजन, अरे चल इधर, काम वग़ैरह कुछ देखना भी है या नहीं ? ये कमबख़्त नौकर मेरे किसी काम के नहीं हैं।

[हरभजन भीतर ही—आया सरकार, आया ।]

क०—पूअर फ़ादर ! कितने अफ़ैक्शनेट फ़ादर हैं ।

दास०—वहूत । रूप को तो वहूत भालो वाशते ।

रूप०—सचमुच मुझको वहुत प्यार करते हैं । रात दिन मेरी चारपाई के पास ही रहते हैं । ऐसे फादर वहुत कम होंगे ।

क०—आप उनके इकलौते वेटे भी तो हैं ?

दास०—हाँ, एकाकी ।

रूप०—फिर जब से मेरी माँ की डैथ हुई है तब से तो और भी इनका प्रेम मुझ पर वढ़ गया है ।

दास०—ऐशा होना शाभाविक है ।

क०—यू मस्ट रेसपेक्ट पूअर फ़ादर इम्मेसली । मिस्टर कपूर, ही इज़ वरदी आव दैट् ।

रूप—दैट आइ डू ।

दास०—विलकूल ठिक है ।

क०—अच्छा तो मैं, मिस्टर रूप, तुम्हें ज़रा एग्ज़ामिन कर लूँ ?

रूप०—ज़रूर ।

[कपूर अपना स्टैथेसकोप निकाल कर रूप के चेस्ट को जाँचते हैं और अँगुली से चेस्ट की आवाज़ लेते हैं ।]

दास०—हाम तो काल जाँच लिया था । कोई ऐशा वात नेईं !

क०—हाँ, कोई ऐसी वात तो नहीं है । अच्छा, दर्द कहाँ होता है ?

रूप०—पेट में ।

दास०—दारद किश जागा शे निकालता ?

क०—याने किस जगह से शुरू होता है ?

रूप०—[पेट पर अँगुली रख कर उसे घुमाते हुए] यहाँ से उट कर ऊपर की तरफ जाता है, डॉक्टर साहब !

क०—कल क्या खाया था ?

रूप०—वही जो आपने बतलाया था। फ्रूटजूस और बारली वाटर।

दास०—पेट कुछ भारी मालूम देता ?

रूप०—कुछ कुछ।

क०—मोशन हुआ था ?

रूप०—कुछ-कुछ।

दास०—ये दर्द 'कालीक' होने शाकता।

क०—लेकिन 'कालिक' समझना कठिन है। 'कालिक' में तो बावेल्स में ग्रिपिंग पेन होना चाहिए। ऐसा तो नहीं है ?

रूप०—कभी कभी ऐसा नही होता।

क०—शार्प और स्पेसमोडिक पेन तो नहीं है ?

रूप०—नहीं।

क०—तब 'स्पेसमोडिक कालिक' नहीं है। कै की तबीयत तो नहीं होती ?

रूप०—नहीं।

क०—तब 'बिलियस कालिक' भी नहीं है। अच्छा, खट्टी डकार तो नहीं आती ?

रूप०—नहीं।

क०—तब 'फ्लेटुलेंट कालिक' भी नहीं।

दास०—आच्छा, पेट के अन्दर जोलान तो नाहीं मालूम देता ?

रूप०—नहीं।

क०—तब 'इन्फ्लेमेटरी कालिक' भी नहीं है। रात में दर्द ज़्यादा रहता है कि दिन में ?

रूप०—रात में बढ जाता है। पेट में मरोड़ सी होती है।

क०—क़ब्ज़ से हो सकती है। 'एक्सीडेंटल कालिक' हो सकता है।

रूप०—नहीं खाया तो कुछ जाता नही। खाता ही नहीं, क़ब्ज़ कहाँ से होगा ?

क०—खाया न जाय तो क्या क़ब्ज़ न होगा ?

दास०—आच्छा, पेट दाबाने शे दारद हालका पड़ता ?

रूप०—कुछ-कुछ। रात में तो पेट के बल ही सोता हूँ।

दास०—[हाथ पर हाथ मार कर] ओ ! बीमारी को धार लिया। आब केधर जाता है। 'इन्फ़्लेमेटरी कालिक' तो नाहीं है।

क०—फिर 'कालिक' का कौन-सा टाइप हो सकता है डॉक्टर ? कुछ सोच सकते हैं ?

दास०—आच्छा मिश्टर रूप, ये दारद डाओने शाइड हाय या बायों शाइड ?

क०—आइ मीन, राइट आर लेफ़्ट साइड ?

रूप०—राइट साइड।

क०—[सोचते हुए] लेकिन डॉक्टर, फीवर भी तो है। अगर 'इन्फ्लेमेटरी कालिक' नहीं है तो फीवर तो 'कालिक' में हो ही नहीं सकता।

दास०—लेकिन जाशती फीभर तो नाहीं है। नाइटी नाइन प्वाइट शिक्श, क्यों मिश्टर रूप ?

रूप०—नाइटी नाइन प्वाइट एट्।

दास०—ओ एक ही हाय ! देखूँ तूमरा पेट [पेट देखते हैं।] ओ, वावेल्श ठिक काम नेई किया। डाओने तरफ एबडोमेन टेण्डर हाय। 'एक्शीडेण्टल कालीक' होने शाकता।

क०—लेकिन डॉक्टर, मैं आपसे डिफर करता हूँ। फ़ीवर होने से 'इन्फ्लेमेटरी कालिक' के सिम्पटम्स हो सकते हैं।

दास०—लेकिन पेट मे जोलान तो नाहीं है। शीरफ़ फीवर होता हाय।

रूप०—हाँ, फ़ीवर तो हमेशा रहता है।

दास०—आछा तो 'हेपेटिक' होने शाकता। गाल-डक्ट में श्टोन होने शाकता।

कपूर—ओ यस, यही हो सकता है। नाऊ आइ कम्प्लीटली एग्री विद् यू। यही है, 'हैपेटिक कालिक' है।

दास०—देख के हाम मालूम कार लिया। जोदि 'एक्शीडेण्टल' नेई तो 'हैपेटिक' तो होने होगा। तूम हामको फीभर का याद दीलाया तो हाम बोल दिया जे 'हैपेटिक कालीक' ही होने शाकता। उशमें हालका फीभर होने होता, डाक्टर कोपूर।

क०—ठीक है, तब तो परगेटिव मेडीसंस देना ही नहीं चाहिए।

दास०—ओ नो। ऊहेन कालीक रान्श इन्ट्र शाच काडिशाश पारेगेटिव शूड नाट बी गिडहेन। [रूप से] मिश्टर रूप, पेन दो तारा होता। ईन्फ्लेमेटरी दाबाने शे बाढ़ता, इरीटेटीभ दाबाने से घाटता। ये दारद कोल्ड, रियूमेटिजम, आर इनडाइजेशन शे होने होता। जोदि जाइंट मे होता तो गाउट आर ट्युबरकुलार भी होता। खाली पेट में होने शे एशीडिटी आर डिशपेपशीया होने होता। शारे बादन में होने शे ईन्फ्ल्यूएञ्जा। शारे बादन में होता?

रूप०—जी नहीं, सिर्फ पेट में।

दास०—तो तिन तारा का दारद होने शाकता। [अपनी अँगुलियों पर गिनते हुए] एक्शीडेंटल होने शाकता, इन्फ्लेमेटरी होने शाकता आर हैपेटिक होने शाकता। हम शोचता जे हैपेटिक होने शाकता। शार ऊलियम मूर बोलता जे ऊहेन एभर पेन इज डेजिरस देयर इज जानरली फिभर।

क०—तो फिर हम लोग बगल के कमरे में डिसाइड करें क्या ट्रीटमेंट होना चाहिए।

दास०—हाँ, चोलिए।

[जाने को उद्यत होते हैं।]

रूप०—[आग्रह से] नहीं डाक्टर साहब, आप लोग यहीं डिसाइड कीजिए कि आप लोग मेरा ट्रीटमेंट कैसा करेंगे।

दास०—तुम 'नारभस' तो नाहीं होगा?

रूप०—मैं बच्चा तो हूँ नहीं। एम० ए० में पढ़ता हूँ। मेरी तो आप लोगों की बातों में दिलचस्पी ही बढ़ रही है।

क०—आलराइट, डाक्टर, यहीं डिसाइड करें। कोई ऐसी बात तो है नहीं। मिस्टर रूप इज़ एन् एज्यूकेटेड यङ्ग मैन।

दास०—ओ कोई बात नेई। डिशाइड कारने शाकते।

क०—ठीक है, तो इनका एलमेंट 'हैपेटिक कालिक' है। [सोचते हैं।]

क०—लेकिन डॉक्टर, अगर 'हैपेटिक कालिक' होने से गाल डक्ट में स्टोन है तब तो ऑपरेशन करना होगा।

रूप०—[घबड़ा कर] क्या आपरेशन ?

क०—हाँ, अगर 'हैपेटिक कालिक' है तो ऑपरेशन तो करना ही होगा। क्यों डॉक्टर ?

दास०—जोरूर, 'हैपेटिक' का शराल दवाई नाहीं है। ऑपरेशन कारने होता।

रूप०—[अपने स्थान पर ही कुछ विचलित होकर] ओह, ऑप-रेशन !

दास०—हाँ, ऑपरेशन, आप डारते क्यों ?

रूप०—क्या बिना ऑपरेशन के अच्छा नहीं हो सकता।

दास०—जाब हैपेटिक होता तो ऑपरेशन जोरूरी काराना होता, भाई।

रूप०—ओह, मुझे छोड़ दीजिए। आप लोग जाइए। मैं यूँ ही मर जाऊँगा। ओह, ऑपरेशन ! ऑपरेशन !!

क०—आप ऐसी बातें क्यों करते हैं? सेठ सोमेश्वर साहब ने कहा है कि आपके अच्छा करने में कोई बात उठा न रक्खी जावे।

रूप०—ओह, अब तो मैं बे-मौत मरा।

क०—आप इतना क्यों घबराते हैं मिस्टर रूप? देखिए, आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। आपको इतना 'नरवस' होना अच्छा नहीं मालूम देता। ऑपरेशन कितनी अच्छी चीज है। जो बीमारी हज़ार दवाओं से अच्छी न हो बस ऑपरेशन से 'ओपन' कर सब चीज आँख से देख कर खट खट अच्छा कर दिया। और अब तो दुनिया में ऑपरेशन से क्या क्या नहीं होता!

दास०—आपरेशन शे एक लाग निकाल के फेंक देता। शीरफ एक लाग से आदमी जिन्दा रहने शाकता। ओ बाबा! आपरेशन शे हड्डी नीकाल के लोहा लगा देता।

क०—यू शुड अण्डरस्टैण्ड आल दिस मिस्टर रूप।

रूप०—यह तो सब ठीक है, लेकिन आपरेशन टल नहीं सकता?

दास०—हाम टालने शाकता, लेकिन बीमारी बढ़ने का बात होगा। आपको पारेशानी भी होगा और टाका भी खरच होगा।

क०—आपरेशन में थोड़े दिनों की तकलीफ़ होगी फिर जिंदगी भर के लिए आराम। आप आपरेशन करा लीजिये।

रूप०—ओह, अब क्या करूँ!

क०—आपके करने की कुछ ज़रूरत नहीं। मैं सेठ सोमेश्वर साहब को सब कुछ समझा दूँगा। वे सब बात समझ जायँगे। जिस बात में आप जल्द अच्छे होंगे, उसी की सलाह वे भी देंगे।

रूप०—मैं अपनी जान ख़तरे में नहीं डालना चाहता।

क०—ख़तरे मे कैसे ? हम लोग तो हैं। अगर बीमार लोग यही समझने लगें तो फिर हम लोगो का प्रोफ़ेशन तो गया।

रूप०—तो क्या अपना प्रोफेशन चलाने के लिए आप लोग ऑपरेशन करते हैं ?

दास०—जे बात नेई। हाम तो दुनियाँ को आराम देने आपरेशन कारते।

रूप०—मुझे ऐसा आराम नहीं चाहिए।

क०—तो फिर आप बीमार रहिए। पढ़ना-लिखना चौपट कीजिए। अपने फादर को 'वरीड' रखिए। पैसा फूँकिए और डाक्टरों की फ़ीस दीजिए।

रूप०—मैं इस सबके लिए तैयार हूँ।

क०—फिर ऑपरेशन के लिए तैयार क्यो नहीं हैं ?

रूप०—यों ही।

क०—माफ़ कीजिए, हम लोग आपकी बात नहीं मान सकते। अगर पेशेण्ट के कहने पर डाक्टर चले तो वह डाक्टरी कर चुका।

दास०—हाँ, शो तो नाहीं होने शाकेगा।

क०—सुनिए, मिस्टर रूप, या तो आप हम लोगो की बात मान ऑपरेशन कराइए या फिर हमारा 'गुडबाई'। हम सेठ सोमेश्वर साहब से सब कुछ कह देंगे। फिर आप जानिए और आप का काम। ताज्जुब की बात है कि आप इतने एज्युकेटेड होकर इस तरह नासमझी की बातें करते हैं। आइ एम रीयली वैरी सॉरी।

रूप०—तो बिना अपरेशन के काम नहीं चलेगा।

क०—नहीं। अगर आप हम पर फैथ नहीं रखते तो फिर आप से कुछ नही कहना।

दास०—आप शे की बोलूँ रूप! हाम नेई जानता था जे आप इतना काचा आदमी हाय!

रूप०—आपरेशन कराना ही होगा?

क०—हम लोगों की राय में।

रूप०—अच्छा, तो फिर एक बात··· ··· ···[रुक जाता है।]

दास०—बोलिए, बोलिए, रुक केयों गिया?

क०—हाँ, कहिए न?

रूप०—देखिए···[फिर रुक जाता है।]

क०—क्या··?,

रूप०—बाबू जी कहाँ हैं।

क०—वे काम करने गये हैं। शायद दूकान पर।

रूप०—नहीं, देख लीजिए।

क०—[पुकार कर] जगदीश।

जग०—[आकर] जी।

क०—सेठ साहब इस वक्त कहाँ हैं?

जग०—दूकान की तरफ गए हैं। अभी दस मिनट में आने को कह गए हैं।

रूप०—देखो जगदीश, तुम भी जाओ।

क०—इसे क्यों भेज रहे हैं? किसी काम की ज़रूरत हुई तो?

रूप०—नहीं इस वक्त कोई काम नहीं है। देखो जगदीश, बाबूजी से कहना कि आते वक्त ताज़ी मोसम्मी लेते आवें।

जगः—बड़े सरकार ने कहा था, यहीं रहना।

रूप०—नहीं, तुम जाओ। क्या तुम मेरे काम पर नहीं जाओगे?

जग०—नही सरकार, जाऊँगा।

रूप०—तो तुम जाओ।

जग०—बहुत अच्छा! (जाता है।)

क०—बहुत फल तो रक्खे हैं! अङ्गूर, अनार वग़ैरह।

रूप०—नहीं, मेरी मोसम्मी खाने की इच्छा है।

क०—अच्छा, वह क्या बात है जो आप कहना चाहते थे?

रूप०—जगदीश गया?

क०—[सामने की खिड़की के समीप जाकर देखते हुए] हाँ, वह जा रहा है।

रूप०—देखिए, डॉक्टर साहब मैं एक बात कहूँ।

दास०—बोलिए ना।

क०—आप तो ड्रामा कर रहे हैं।

रूप०—ड्रामा नहीं। देखिए, मैं बिलकुल बीमार नहीं हूँ।

[उठकर बैठ जाता है।]

क०—[आश्चर्य] अच्छा!

दास०—[आश्चर्य से] अच्छा?

रूप०—देखिए डॉक्टर साहब, मैं बिलकुल बीमार नहीं हूँ। टेम्प-

रेचर तो यूँ ही बिस्तर मे पड़े-पड़े हो गया। यों मैं बिलकुल अच्छा हूँ।

क०—फिर यह बीमारी का स्वाँग क्यों रखा है? सब को फ़िकर में डाल रक्खा है?

दास०—ये की बात भाई? ऐशा तो हाम शुना नेई।

कपूर—गुड फ़ार नथिंग। सब को मुफ़्त की चिन्ता!

रूप०—डॉक्टर साहब, मैं ही बहुत चिन्ता में हूँ। [उठ खड़ा होता है।] शरीर से मैं बिलकुल अच्छा हूँ, लेकिन मन से बहुत दुखी, बहुत दुखी!

क०—अच्छा!

दास०—ये की बात?

रूप०—सुनिए, आप लोग मेरी दवा क्या करेंगे? [टहलता हुआ] कोई बीमारी भी हो! मैं ऑपरेशन की बात सुन कर अपने भेद को नही छिपा सका, आपसे कहना ही पड़ा। मुफ़्त में मैं अपना पेट नहीं कटवा सकता!

कपूर—अरे, तो हम लोगों को क्या मालूम!

रूप०—मैंने बीमारी का बहाना किया है, यह जानते हुए भी कि बाबूजी का बहुत रुपया ख़र्च हो रहा है। लेकिन मै लाचार हूँ। कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है।

क०—ऐसी क्या बात है, आख़िर?

रूप०—मैं वह नही बतलाना चाहता।

दास०—बाबा, हाम तो ये रोकम केश कोभी नाहीं देखा।

रूप०—तो अब देख लीजिए।

क०—लेकिन आप बतलाना क्यों नहीं चाहते ? बीमार हैं, बीमार नहीं भी हैं। फ़िकर है लेकिन फिकर की बात आप छिपाना भी चाहते हैं। यह बात क्या है ?

रूप०—इसलिए कि आप लोग कोई मेरी मदद नहीं कर सकते।

क०—यह आप कैसे कह सकते हैं ?

दास०—बाबा, हामरा अकिल तो काम नेई करता।

क०—हम लोग पेशेण्ट की मदद हर प्रकार से करने के लिए तैयार हैं। मालूम तो होना चाहिए।

1315/05

रूप०—तो क्या आप मदद कर सकते हैं ?

क०—क्यों नहीं। अगर हमारे बस की बात हो तो क्यों नहीं करेंगे ?

रूप—नहीं, आप मदद नहीं कर सकते।

क०—तो फिर कोई बात नहीं, हम लोगों को अब यहाँ से चले जाना चाहिए।

रूप०—अच्छी बात है, फिर मुझे भी लेटना चाहिए; बीमार होना चाहिए।

दास०—की बोलते रूप बाबू ! ठेकाने की कोथा बोलो।

रूप०—डॉक्टर साहब, मैं बिलकुल सच बोल रहा हूँ। मेरी तबीयत अच्छी नहीं है।

दास०—ताभी तो हम लोग आया।

रूप०—आप लोग तो ऑपरेशन करने आये हैं। यह दवा नहीं है।

क०—मैं भी कुछ नहीं समझ सकता। अच्छी बात है, तो हम लोग सेठ साहब से क्या कहें ?

रूप०—यही कि रूप बहुत बीमार है। उसकी दवा होनी चाहिए।

दास०—ये तूम की बोलता बाबू ?

रूप०—ठीक-ठीक तो कह रहा हूँ कि मैं बीमार हूँ।

क०—अभी आप कह रहे थे कि मैं बीमार नहीं हूँ।

रूप०—हूँ भी और नहीं भी। आप लोग मेरी सहायता कर ही नहीं सकते।

क०—कुछ कहेंगे भी आप!

रूप०—अच्छा तो सुनिये········[सोचता है।]

[कपूर और दासगुप्ता सुनने के लिए शान्त मुद्रा में होते हैं।]

रूप०—कहूँ········[रुक कर] अच्छा जाने दीजिए, मुझे बीमार ही रहने दीजिए!

दास०—आप बोलते केयों नाहीं ? हाम आपनी दावा में कोई बात ऊठा नाही राखेंगे !

रूप०—दवा की बात नहीं है, डॉक्टर साहब।

क०—तो फिर बतलाइए न।

रूप०—आप··कु··सु··म··को जानते हैं ?

क०—कुसुम··?

दास०—कु··शू··म ?

रूप०—हाँ, कुसुम, ओह कितना अच्छा नाम है ! [दास और कपूर एक दूसरे को देख कर मुस्कुराते हैं ।]

रूप०—आप लोग मुस्कुराएँ नहीं । मैं सच कहता हूँ ··।

क०—क्या ?

रूप०—इसी तरह मेरी सहायता करना चाहते हैं ?

क०—मैं इन बातों में क्या सहायता कर सकता हूँ मिस्टर रूप ?

दास०—हाम कि कोरेगा बाबा ! ऐशा डॉक्टरी हम नाहीं किया ।

रूप०—अब कीजिए । अभी आप लोगों के सामने लम्बी ज़िन्दगी है ।

क०—ठीक है, लेकिन अब मैं जान गया कि यह बीमारी हम लोगों से नहीं सँभल सकती ।

रूप०—अब जब आपने यह बात मुझसे कहला ली है तो पूरी ही सुनाऊँगा और आपको मेरी मदद करनी ही होगी ।

क०—आलराइट, दैन गो ऑन ।

रूप०—तो आप कुसुम को नहीं जानते ? [कुर्सी पर बैठता है ।]

क०—नहीं, मैं नहीं जानता ।

रूप०—जिसने म्यूज़िक कानफ्रेंसमें पार साल फर्स्ट प्राइज़ पाया था ।

दास०—हें, वो तो हामरे घर के पाश रेहता ।

क०—अच्छा ! मुझे भी याद पड़ता है कि मैंने उसका गाना सुना था । उसने वायलीन भी अच्छा बजाया था शायद ।

रूप०—हाँ, वायलीन, वायलीन । लाजवाब बजाती है वह ।

क०—इसमें क्या शक है ?

रूप०—मैं...मैं चाहता हूँ कि...।

क०—क्या चाहते हैं आप...?

रूप०—मैं चाहता हूँ कि वह वायलीन फिर एक बार बजावे...।

दास०—तो बीमार काहे को पड़ा ?

रूप०—मैं चाहता हूँ कि वह बीमारी में एक बार मुझे अपना वायलीन सुनावे। एक बार वह मुझे अपना संगीत सुना जाय, ख़ास कर मेरी बीमारी मे...।

क०—लेकिन आप बीमार तो नहीं हैं।

रूप०—नहीं हूँ, लेकिन हूँ, शारीरिक रूप से नहीं, मानसिक रूप से।

क०—तो आप सिर्फ गाना सुनना चाहते हैं या और कुछ···?

रूप०—मैं पहले गाना सुनना चाहता हूँ डॉक्टर! [उठ खड़ा होता है।] ओह, जब वह गाती है तो मालूम होता है जैसे दुनिया फूल की तरह नरम होकर हिल रही है। एक-एक राग जैसे अङ्गूर की बेल है जिसमें मिठास के फल झूल रहे हैं। उसके वायलीन के तार जैसे जीती जागती भावना की लकीरें हैं, जो दुनिया को लपेट कर ख़ुद उसमें लिपट जाती हैं। [भावावेश में आँखें बन्द कर लेता है] वह संगीत···।

दास०—ये कोविता है बाबा!

रू०—उसका ध्यान ही कविता है डॉक्टर! आप लोग शायद यह नहीं समझ सकते। चीर-फाड़ करने वाले सुन्दरता को क्या समझें?

वे तो सुन्दरता को काट कर रख देना जानते हैं। हड्डी जोड़ने वाले कहीं दिल जोड़ सकते हैं !

क०—तो क्या आप समझते है कि डॉक्टरों के पास दिल नहीं होता ! वे क्या पत्थर के बने हुए हैं !

रूप०—दिल होता है, लेकिन उस दिल में सिर्फ़ ख़ून ही रहता है। उसमें होना चाहिए एक पूरी दुनिया, जिसमें—जिसमें .हँसी का बसन्त आता है और आँसू की बरसात होती है। जिसमे किसी से मिलने की चाँदनी निकलती है और न मिलने का अँधेरा होता है।

दास०—ई बात हाम नाहीं समझा। फिर शे बोलो !

रूप०—क्या बोलूँ, जो लोग प्रेम की गर्मी को थर्मामीटर से नापते हैं उनसे क्या बोलूँ !

क०—तो क्या आप समझते हैं कि हम लोग प्रेम करना जानते ही नहीं !

रूप०—प्रेम ? प्रेम की जब उमङ्ग उठती है तो आप लोग उसे लोशन से धो डालते हैं। और वह लोशन से धुलते-धुलते चाहे जो कुछ रह जाय, प्रेम नहीं रह पाता। आप लोगों के दिमाग़ में किसी सुन्दरी को देख कर उसके 'स्केलिटन' की भावना आ जाती होगी। उसकी बोली सुनते समय आप लोग 'ओबुला' की बात सोचते होंगे। उसके केशों के नीचे 'स्कल' होता है, यह आप लोग सोचते हैं या नहीं !

क०—आपकी बात सुन कर तो मुझे अपनी पुरानी दुनिया याद आ रही है। मैं आपके दर्द को महसूस कर रहा हूँ।

रूप०—तब तो आपको मुझसे सहानुभूति होनी चाहिए। और मेरी सहायता करनी चाहिए।

क०—ज़रूर, ज़रूर। अच्छा, अब आप अपनी पूरी बात बतलाइए।

दास०—फिर तो हम भी शुनूँगा।

रूप०—देखिए, मै जो बीमार बना था, वह इसलिए कि वह आकर मुझे गाना सुना जाय। मैं ऐसी परिस्थिति लाता कि उसे आना ही पड़ता। वह आती और मुझे गाना सुनाती।

क०—फिर आपने ऐसा क्यो नही किया?

रूप०—आप लोग मेरा ऑपरेशन करने लगे! मेरे पेट काटने की बात सोचने लगे तो मुझे असली बात ज़ाहिर कर ही देनी पड़ी।

दास०—शाँगीत शुनने शे क्या होता?

रूप०—मुझे शान्ति मिलती। मैंने तो उसे जान ही लिया है। अगर वह भी मुझे पहचान सकती!

क०—तो आप चाहते हैं कि यह पहचान दूर तक बढ़ जाय?

रूप०—शायद।

क०—तो मालूम होता है कि आप उसे चाहने लगे हैं।

रूप०—मुमकिन है।

क०—चाहने का मतलब क्या है?

रूप०—चाहने का मतलब? एक आदमी क्यों हँसता है, क्यों रोता है? उसे प्यास क्यों लगती है? ठण्ड में वह गरम कपड़े क्यों पहनता

है ? गर्मी में वह पङ्खा क्यों करता है ? उसे भूख क्यों लगती है ?

दास०—ये तो नेचर का नेशेशिटी है।

रूप०—मेरी यही नेसेसिटी है डॉक्टर ! मैं इससे ज़्यादा क्या बतलाऊँ कि मेरे दिल में उसकी चाह है। मुझे उसके रूप की बीमारी है !

क०—ठीक है, मै समझ सकता हूँ मिस्टर रूप ! एक्सीडेंट देखिए, रूप को रूप की बीमारी है !

रूप०—इसे यों कहिए तो ठीक है कि रूप रूप की बीमारी में कुरूप हो रहा है।

दास०—[महज़ कुछ बोलने के लिए] तो उशको चिकेन शूप पीने होगा।

रूप०—डॉक्टर साहब, आप बहुत बड़े डाक्टर हैं।

क०—अच्छा तो ये बात है।

रूप०—हाँ, डॉक्टर कपूर यही मेरी चाह है।

क०—लेकिन इस चाह का नतीजा ?

रूप०—अगर मुमकिन हो सका तो······

क०—आप शादी करेंगे उससे ?

रूप०—मुझे कोई आपत्ति न होगी।

क०—तो आप तो शादी यूँ ही कर सकते थे। उसके लिए इतने बीमार पड़ने की ज़रूरत ही क्या थी।

रूप०—डॉक्टर, मैं ऐसी शादी नहीं करना चाहता। अन्धों की तरह। एक तो मैं शादी करना ज़रूरी समझता ही नहीं, ऐसा नेचर

भी कहता है; लेकिन चूँकि मैं इण्डिया में हूँ, शादी की रस्म होनी ही चाहिए। मैं समाज की परवाह नहीं करता। मैं सिर्फ ख़्याल रखता हूँ अपने ओल्ड फ़ादर का। अगर मैं शादी न करूँगा तो उनको हद दर्जे का सदमा पहुँचेगा। मैं उनका इकलौता बेटा हूँ। उनकी सारी उम्मीदें मुझ पर ही हैं। ऐसी हालत में प्रेम और विवाह को मुझे आपस में मिला देना है। यों मैं इन दोनों को अलग-अलग रखने का पक्षपाती हूँ।

क०—यू आर डूइङ्ग ए ग्रेट सेक्रिफ़ाइस दैन ?

रूप०—यही समझिए! उधर देखिए। [लेनिन के चित्र की ओर संकेत करता है।] लेनिन! इसने मैरिज इन्स्टीट्यूशन की यूज़लैसनैस को समझा है। मैं तो कहता हूँ कि इस बदलते हुए ज़माने में शादी से अच्छे सिटीज़न पैदा न होंगे। प्रेम से अच्छे सिटीज़न पैदा होंगे। और इण्डिया अभी रशा नहीं हो सकता। मैं प्रेम और विवाह में समझौता करूँगा।

दास०—अब हाम शमझा जे तूम बहूत होशियार है रूप बाबू !

रूप०—इसलिए डॉक्टर साहब, मैं चाहता हूँ कि कुसुम भी धीरे-धीरे मुझे अच्छी तरह समझ जाय। मैं तो उसे अच्छी तरह समझता ही हूँ। बिना आपस में एक दूसरे को समझे शादी शादी नहीं, वह दिल की शादी नहीं, दुनिया को दिखलाने की शादी है। अगर वह भी मुझे पहचान सकी तो मेरी इच्छा पूरी होगी।

दास०—लेकीन उशका माँ-बाप तो नेई है। उशका मामा जोरूर है।

रूप०—इसीलिए मुझे उसके साथ विवाह करने में आसानी होगी। क्या डॉक्टर साहब, आप मेरी मदद नहीं कर सकते? क्या आप सिर्फ शरीर ही अच्छा कर सकते हैं, हृदय अच्छा नहीं कर सकते?

क०—[सोचते हुए] आपने कैसी समस्या हम लोगों के सामने रक्खी है, कुछ समझ में नहीं आती!

दास०—तो जाब शेठ शाहब पूछेगा तो हाम ये बोल देगा जे रूप बाबू बीमार नेई है।

रूप०—कोई बात नहीं। आप मेरी इतनी लम्बी कहानी सुन कर भी कुछ नहीं समझ सके, तभी तो मैं कहता हूँ कि डाक्टर लोग प्रेम की गर्मी को थर्मामीटर से नापना जानते हैं। उनके पास दिमाग़ होता है, दिल नाम की कोई चीज़ नहीं होती।

क०—सचमुच डाक्टर दास, यह बात मेरी समझ में आ रही है।

दास०—तुम भी रूप बाबू की तारा बोलते डॉक्टर कोपूर?

क०—नहीं डॉक्टर, रूप बाबू के कहने में सचाई है।

रूप०—और देखिए डॉक्टर दास गुप्ता, बाबू जी से ऐसा कहकर आप मुझे बहुत सदमा पहुँचायेंगे। आप मेरा नुक़सान तो करेंगे ही आप अपना भी बहुत नुक़सान करेंगे।

दास०—की रोकम?

रूप०—आपकी इतनी लम्बी फ़ीस बन्द हो जायगी।

दास०—लेकीन जब आप बीमार नेई तब हाम फोकट में फीश केयों लेगा?

रूप०—फोकट क्यों ? आप अपनी दवा कीजिए। आप सिर्फ ऑपरेशन भर न करें। मै बीमार बना रहूँ, आप मुझे अपनी दवा दीजिए। मैं दवा पियूँ या फेंक दूँ आप दवा दीजिए। आप को दवा की क़ीमत मिलेगी और आपके आने की फीस !

दास०—लेकिन शेठ शाहब का टाका तो खारच होता !

रूप०—वह रुपया मेरा है। मैं ही तो उनका 'एअर' हूँ ? वे मेरे लिए ही तो अपना रुपया छोड़ेंगे ? मेरे सिवाय उनका और कौन है ? माँ हैं ही नहीं। सारे घर में मैं अकेला हूँ उनका इकलौता लड़का, जिसके लिए वे जान देते हैं।

क०—मिस्टर रूप, आपकी सारी बातें मेरी समझ में आ गईं। मैं आपसे पूरी सिमपैथी रखता हूँ। लेकिन जब आप बीमार नहीं हैं तब आपके फादर से फ़ीस लेना मेरा कानशस अलाऊ नहीं करता।

रूप०—अगर आपकी सिमपैथी मुझसे है तो आपको मेरी मदद करनी चाहिए। आपका मुझ पर बहुत एहसान होगा। उसे मैं शायद ज़िन्दगी भर न भुला सकूँ। डॉक्टर दास गुप्त, मै उसे आजीवन नहीं भुला सकूँगा।

दास०—शो तो ठिक हाय।

क०—अच्छा, अगर मदद की जाय, तो किस तरह की मदद की जाय ?

रूप०—देखिए, आप बाबू जी से यह सब कुछ न कहें। आप यही कहें कि रूप बीमार है। उसकी दवा होनी चाहिए। फिर बीमार रह कर मैं कोई रास्ता निकालूँगा कुसुम से मिलने का। आप लोग

दवा कीजिए और अपनी फीस लीजिए। जितने दिनों तक मेरी दवा होगी उतनी ही ज़्यादा फ़ीस आपको मिलेगी।

दास०—ऐशा तो मुझशे नाही होने शाकेगा।

रूप०—न सही, लेकिन सोच लीजिए। डॉक्टर दासगुप्ता, ऐसे मौक़े बार बार नहीं आते। डॉक्टर कपूर, ऐसे मौक़े बार-बार नहीं आते।

दास०—शो तो ठिक है। तो इश पर भी काशाल्टेशान कार लो डॉक्टर।

क०—मैं तो तैयार हूँ। अगर इससे रूप बाबू का भला होता है तो मुझे कोई आबजेक्शन नहीं है! अभी तक हम 'वाडी' का ट्रीटमेंट करते थे, अब 'माइंड' का करेंगे। हम लोग फीस लेंगे तो क्या दवा न देंगे? लेकिन असली बात तो आप किसी से न कहेंगे?

दास०—आप तो नाहीं बोलेगा?

क०—मैं क्यों कहने चला? मिस्टर रूपचन्द्र की इच्छा पूरी हो हम लोगों को ख़ुशी होगी।

दास०—हामरा भी ख़ुशी होगा। बाबा, पेशेण्ट आछा हो, हामरा तो ये ई बात।

रूप०—मैनी-मैनी थैंक्स डॉक्टर। आई शैल नेवर फारगेट युअर काइंडनैस। अच्छा तो मैं अब लेटता हूँ। आप बाबू जी से यही कहें कि तबीयत अभी थोड़े दिन और ख़राब रहेगी। ऐसी बीमारी इतनी जल्दी अच्छी नहीं होती। हाँ, एक बात अगर आप लोग कह सकें तो यह भी कह दीजिए कि इनको अच्छा करने के लिए सङ्गीत सुनना

बहुत ज़रूरी है। जब वे पूछेंगे कि कैसा प्रबन्ध करना चाहिए, तो आप कुसुम का नाम ले दीजिए। अगर आप यह कह सकें तो सारा मामला ही सुलझ जाय। और मैं इस बात के लिए तैयार हूँ कि आप बड़ी से बड़ी क़ीमत पर यह काम कर सकें।

दास०—जे कोई बात नेई। हामरा घर के पास ओ रेहता है। हाम उशको बोल देगा जे तूमरा को बिमार का काष्ट दूर कारना ऊचित। ओ आ जाइगा।

रूप०—तो डॉक्टर साहब, आप मेरी यही दवा करें।

क०—ठीक है, आपने जैसा कहा, वैसा मैं सेठ साहब से कह दूँगा। आप कोई फिकर न करें।

रूप०—थैंक्स, तो मैं अब लेटता हूँ।

[रूपचन्द्र पलंग पर मुस्कुराते हुए लेटता है और फिर कमर तक चादर ओढ़ लेता है।]

क०—तो अब कालिक की दवा तो न दी जाय?

रूप०—देखिए, अगर आप शर्बत बना कर भेजेंगे तो मैं पी लूँगा। और कोई दवा भेजने पर मैं उसे पीने के बहाने तकिये पर या नीचे गिरा दूँगा। दवा की क़ीमत तो मिलेगी ही। शर्बत के लिए क़ीमत कुछ बढा लीजिये, फीस बदस्तूर। और देखिए, मेरे बिल्कुल अच्छे हो जाने पर प्रेज़ेन्ट!

क०—बिल्कुल अच्छे हो जाने पर······

रूप०—आप बिल्कुल अच्छे हो जाने का मतलब समझते हैं?

क०—हाँ, समझता हूँ।

दास--[हँसते हुए] फीर 'हैपैटिक कालीक' का ऑपरेशन नेहीं होगा ?

रूप—अब आप मेरे दुश्मन का ऑपरेशन करे ।

क०—फिर मिस्टर रूप, अब आप को दर्द कहाँ होता है ?

रूप०—[हँस कर] पेट के कुछ ऊपर जहाँ दिल है ।

[सब हँसते हैं । जगदीश आता है ।]

जग०—डॉक्टर साहब, सरकार आ रहे हैं !

क०—हाँ, हम लोगों ने कंसल्टेशन भी कर लिया ।

दास०-- बहुत आछा कासल्टेशान !

[सोमेश्वर का मुसम्मी का थैला लेते हुए प्रवेश ।]

सो०--[आते ही] रूप, मैं आ गया । मैं आ गया । [कपूर से] कहिए डॉक्टर साहब, आप लोगों ने कसल्टेशन किया ? कैसा है मेरा रूप ? कब तब अच्छा हो जायगा ? कोई ख़ास बात तो नहीं है ?

क०—नहीं, कोई ख़ास बात नहीं है। हम लोगों ने काफ़ी कंसल्टेशन किया । रूप बाबू की तबीयत ख़राब ज़रूर है, लेकिन कोई ज़्यादा ख़राब नहीं है ।

दास०--फ़िकर का ज़ोरुरत नेई, शीगेर आछा होगा । थोरा दीन लागेगा । कोई बात नेई ।

सो०—[शान्ति की साँस लेकर] ओह डाक्टर, अब मुझे सच्ची शान्ति मिली । आप लोगों ने सचमुच मुझको बचा लिया । नहीं तो रूप की चिन्ता मुझे खाये जाती थी । अब बहुत अच्छा है । [मोसम्मी की गठरी पर दृष्टि जाती है ।] देखिए, मैं अपने रूप के

लिए कैसी अच्छी-अच्छी मोसम्मी लाया हूँ। बिल्कुल ताज़ी। [हाथ में एक मोसम्मी लेते हुए] बाज़ार से अपने हाथ से चुनकर। रूप, देखो ये मोसम्मी। अब तुम बिलकुल अच्छे हो गए। डॉक्टरों ने एक आवाज़ से कह दिया कि कोई बात नहीं। [कपूर से] डॉक्टर साहब, आपने ध्यान से तो कंसलटेशन किया है ? [डॉक्टर दास गुप्ता से] डॉक्टर साहब, कोई बात रह तो नहीं गई ? डिसकशन तो ठीक हुआ ?

दास०—डीशकाशन तो वेशी हुआ, लेकिन बात ठिक है। फिकर केयों कारते ? 'एक्शीडेंटल कालीक' में कोई बात नेई होता।

क०—हाँ, 'एक्सिडेंटल कालिक' में ज़्यादा घबड़ानानहीं चाहिए। पेशेंट के मन में शान्ति होनी चाहिए।

सो०—मैं तो रूप से कहता हूँ कि शान्त रहे। ख़ुशरहे। लेकिन वे हमेशा उदास रहते हैं। [मोसम्मी दिखला कर] रूप, ये मोसम्मी देखो, अच्छा हुआ तुमनें जगदीश से कहला भेजा कि ताज़ी मोसम्मी चाहिए। ये देखो मैं अपने हाथ से ताज़ी मोसम्मी लाया हूँ। ज़रा ख़ुश हो जाओ रूप, तुम्हारी मोसम्मी खोजने में ही तो थोड़ी देर लग गई, नहीं तो मैं और पहले आ जाता।

दास०—ओ कोई बात नेई।

क०—अच्छा हुआ, थोड़ी देर लग गई। क्यों रूप ?

रूप०—हाँ, ताज़ी मोसम्मी खाने को मिलेगी।

सो०—मैं जानता हूँ, मेरे रूप को मोसम्मी बहुत अच्छी लगती है ये कमबख़्त नौकर क्या जाने कि मेरे रूप को क्या अच्छा लगता है।

लाते हैं अनार, अँगूर, केले। क्यों रूप, तुम्हे मोसम्मी अच्छी लगती है न?

रूप०—हाँ, बाबू जी।

सो०—बस, तो तुम अब ख़ुश हो जाओ। अब तुम उदास मत रहना।

क०—यह उदासी एक तरह से दूर हो सकती है।

सो०—कैसे? जल्दी बतलाइये डॉक्टर, मैं उसका इन्तज़ाम करूँगा।

क०—वह ऐसे कि इन्हें गाना सुनाया जाय।

सो०—तो घर में रेडियो तो है।

क०—रेडियो का गाना··· ···

दास०—जे बात तो हम शोचा नेई।

रूप०—बाबूजी, रेडियो की आवाज़ मुझे अच्छी नहीं लगती। कुछ दबी हुई सी, मेटेलिक-सी होती है। और जब रेडियो सामने बजता है तो मालूम होता है जैसे मुरदे से आवाज़ निकल रही है। रेडियो से मुझे डर-सा लगता है।

सोम०—ना, ना! तब रेडियो को फेंको। अरे जगदीश, जगदीश!

जग०—[आकर] जी सरकार।

सोम०—देखो मुनीम जी से कह देना कि आज से रेडियो नहीं बजायेंगे, जब तक कि मेरा रूप बीमार है। समझे। रेडियो बन्द करके रख दें।

जग०—बहुत अच्छा सरकार। [जाता है।]

सो०—ये रेडियो भी बहुत बुरी चीज़ है। सन्दूक के भीतर से आवाज़ आती है। सचमुच डरने की बात है। और जाने कैसी-कैसी आवाज़!

दास०—कोभी-कोभी शीटी भी मारता है!

क०—जैसे कोई स्पिरिट आवाज़ ऊँची-नीची करके चीख़ रही है।

सो०—इसके बारे में ज़्यादा बातें करना ठीक नहीं। मेरे रूप को डर लगता है।

रूप०—हाँ, बाबू जी।

सो०—डरने की कोई बात नहीं है रूप। इसीलिए तो मैं तुम्हारे साथ हरदम रहता हूँ। बीमारी में डर और भी बढ जाता है। जिस्म के साथ मन भी तो कमज़ोर हो जाता है! मैं इसीलिए तो तुम्हारे पास ही रहता हूँ।

हर०—[आकर] सरकार, बाहर कुछ दलाल आपसे मिलना चाहते हैं।

सो०—[झुँझला कर] मैं कहता था न कि दलाल आते होंगे। इन कम्बख़्तों को यही वक़्त मिलता है जब मैं अपने रूप के पास रहता हूँ। अभी दस मिनट के लिए दूकान पर था, तब नहीं आये। बेईमान कहीं के। जाके कह दो इस वक़्त मैं अपने रूप से बातें कर रहा हूँ। जानते नहीं रूप बीमार है!

हर०—सरकार, मैंने तो कहा था; लेकिन उन्होंने कहा कि ज़रूरी काम है।

सो०—मेरे लिए सब से ज़रूरी काम इस वक्त रूप की बीमारी को अच्छा करना है।

दास०—आप जाने शाकते।

सो०—अजी डॉक्टर साहब, आप भी क्या कहते हैं! मैं अपने रूप को इस वक्त नहीं छोड़ सकता। अभी आया हूँ और अभी चला जाऊँ? रुपये से रूप मुझे ज़्यादा प्यारा है। देखो हरभजन, उनसे कहो कि जब तक रूप अच्छा न हो जाय तब तक उनके आने की ज़रूरत नहीं है।

हर०—बहुत अच्छा सरकार। [जाता है।]

सो०—ये लोग भी अजीब खोपड़ी के आदमी हैं! जानते हैं कि मेरा बेटा बीमार है, तब भी दुश्मन की तरह सिर पर सवार रहना चाहते हैं।

क०—जाने दीजिए। हमें तो रूप को अच्छा करना है म्यूज़िक सुना कर।

सो०—हाँ तो डॉक्टर साहब, बतलाइए क्या करूँ? रेडियो रूप को अच्छा नहीं लगता। फिर क्या इन्तज़ाम करें? ग्रामोफ़ोन?

रूप०—बाबू जी, उसको सुनते-सुनते तो ऊब गया। वही गाना बार-बार सुनो। कालेज की पढ़ाई की तरह एक ही बात दस बार पढ़ो, दस बार रटो।

सो०—फिर बतलाइए, क्या किया जाय डाक्टर? सङ्गीत सुनाना बहुत ज़रूरी है डाक्टर?

क०—बहुत ज़रूरी है। अगर आप चाहते हैं कि मिस्टर रूप, जल्दी ही अच्छे हो जायँ।

सो०—मैं तो यही चाहता हूँ भाई। जल्दी से जल्दी यही चाहता हूँ। कोई अच्छा गाता हो उसे बुलाया जाय? क्या आप कोई ऐसा इन्तज़ाम कर सकते हैं डाक्टर कपूर?

क०—[सोचता हुआ] मैं? मैं क्या इन्तज़ाम करूँ? [सिर खुजला कर] हाँ, याद आया। पारसाल म्यूज़िक कानफ्रेंस में एक लड़की ने बहुत अच्छा गाना गाया था। उसे ही फर्स्ट प्राइज़ मिला था। सब से अच्छी गाने वाली वही ठहराई गई थी। ओह मारवलस! वायलीन भी फर्स्ट क्लास बजाती है। अगर वह गाना सुना सके तो ये बहुत जल्द अच्छे हो सकते हैं।

सो०—उसके सिवाय क्या और कोई अच्छा गाना नहीं गाता?

क०—यों गाने वाले तो बहुत हैं; लेकिन······

सो०—मेरे कहने का मतलब ये कि कोई अच्छा गाने वाला हो जो रात-दिन यहीं रह सके और मेरे रूप को जब चाहे तब अच्छा गाना सुना सके!

क०—हाँ, ये भी हो सकता है; लेकिन 'मेल वॉयस' 'फ़ीमेल वॉयस' को पा नहीं सकती। लड़की के गाने में जो मिठास होती है, वह किसी लड़के के गाने में हो नहीं सकती। वह तो गाना ही दूसरा हो जाता है।

दास०—'फीमेल वॉयेश' तो चोमत्कार होता। ओ बीमारी ठिक कारने शाकता।

क०—इसीलिए मैंने 'सजेस्ट' किया यों आप चाहे जिसको बुलावें।

सो०—नहीं डॉक्टर साहब, अगर आप किसी लड़की का गाना 'सजेस्ट' करते हैं तो उसी का इन्तज़ाम होगा। रूप की तबीयत अच्छी हो जानी चाहिए।

क०—इसीलिए मैंने कहा। म्यूज़िक इन ए फीमेल थ्रोट बिकम्स ए डिवाइन मिलोडी। मेरे कहने का मतलब यह है कि गाने की ब्यूटी तो 'फेयर थ्रोट' में ही है। यह आदमियों की ज्यादती है कि वे औरतों के इस आर्ट पर क़ब्ज़ा करें।

दास०—न्यू जानरेशान तो इश पर आन्दोलान कारने शाकता।

सो०—तो आप के कहने का मतलब कह है कि गाना किसी लड़की को गाना चाहिए!

क०—हाँ, मैं तो यही सोचता हूँ, यही समझता हूँ।

सो०—और गाना वही लड़की गाये? क्या नाम बतलाया उसका आपने डॉक्टर कपूर?

क०—[दास गुप्ता से] क्या नाम है डॉक्टर उसका?

दास०—ओ···नाम? नाम विस्रत हो गिया। [सिर खुजलाता है।]

रूप०—मैं गाना नहीं सुनूँगा। आप मेरे सिर में [कपूर की ओर देख कर] जवाकुसुम तेल ही डाल दीजिए। गाना-वाना छोड़िए।

क०—[जवाकुसुम नाम सुन कर] यह कुछ नहीं, अगर अच्छा

होना है तो जो मैं कहता हूँ, वह करेंगे या अपने मन की ? हाँ, याद आया, उसका नाम है कुसुम।

सो०—क्या नाम बतलाया कुसुम ? तो वह कैसे आवे ?

क०—कोई मुश्किल बात नहीं है। उसके माँ-बाप तो कोई हैं नहीं, उसके मामा को एक ख़त लिख दीजिए। वह चली आयेगी! लिख दीजिए कि उसे ५) दिन मेहनताना दिया जायगा।

सो०—५) क्या, मैं अपने रूप को अच्छा करने के लिए १०) दे दूँगा! उसके मामा का क्या नाम है डॉक्टर कपूर ?

क०—डॉक्टर दास गुप्ता जानते होंगे।

दास०—ओ, तो हामरे घर के पाश ही रेहता। उशका नाम है धोनपात चाँद।

सो०—ओ धनपतचन्द। मैं तो उनको जानता हूँ। मेरे दूकान से पहले उनका हिसाब-किताब रहता था। लेकिन उनका दिवाला निकल गया। अब तो बहुत गरीब हैं।

क०—अच्छा ये बात है ? तब तो ५), १०) दिन पर वे बहुत जल्द राज़ी भी हो जायँगे।

सो०—हाँ, राज़ी हो सकते हैं। बहुत ग़रीब हैं। मुझे तो बड़ा रञ्ज है उनके लिए, अपनी जात-बिरादरी के लोग हैं ?

क०—ओ, ऐसी बात है ? तब तो इस तरह आप अपने बिरादरी के एक भाई की मदद भी करेंगे।

सो०—हाँ, यह बात ठीक है। वाह डाक्टर साहब, क्या कहना है! आपने कितना अच्छा नाम बतलाया! वाह, क्या कहना है! हमारा

काम निकलेगा और बिरादरी के एक भाई की मदद भी हो जायगी। कुसुम बेटी से कह दूँगा कि बेटी, तू इतना काम कर दे। इस को अपना ही घर समझ।

क०—हाँ, यही कहना चाहिए। आप एक ख़त अभी लिख दीजिए। [डाक्टर कपूर रूपचन्द की ओर देखते हैं।]

रूप०—बाबूजी, तबीयत तो कुछ सुनने की होती नहीं है, लेकिन अगर डॉक्टर कहते हैं तो सुनना पड़ेगा। ख़ैर, सुनूँगा।

सो०—रूप, तुम जल्दी अच्छे हो जाओगे। अच्छा, तो मैं अभी लिख देता हूँ। [पुकार कर] जगदीश, ओ जगदीश!

जग०—[आकर] कहिए सरकार!

सो०—ज़रा काग़ज़, क़लम तो ले आ।

जग०—बहुत अच्छा सरकार! [जाता है।]

दास०—नाम है धोनपात चाँद, लेकिन गोरीब हाय।

क०—लोग अपनी हसरत नाम रख के ही मिटा लेते हैं।

सो०—इनके बाप दादे तो अच्छे पैसे वाले थे, लेकिन अब दिन ख़राब आ गये।

[जगदीश काग़ज़, क़लम और दावात लेकर आता है।]

सो०—इन बेवकूफ़ों से कोई काम ही नहीं होता। काग़ज़ लाने को कहा तो इतना छोटा काग़ज़ लाया है! अरे, दवाई की पुड़िया नहीं बनाना, चिट्ठी लिखना है। कहाँ-कहाँ के जाहिल नौकर मेरे यहाँ इकट्ठे हुए हैं!

क०—हाँ, और देखिए सेठ साहब, आप अपने नौकरों पर नाराज़ बहुत होते हैं। इससे रूप बाबू की शान्ति में भी गड़बड़ होती है।

सो०—[घबड़ा कर] ओ, ऐसी बात है ? नहीं-नहीं, मैं नाराज़ नही होऊँगा। ओ जगदीश, अब मैं तुम लोगों पर नाराज़ नहीं होऊँगा, भाई।

जग०—बहुत अच्छा सरकार !

सो०—और देखो, हरभजन कहाँ है ? उससे भी कह दो कि अब मैं नाराज़ नही होऊँगा।

जग०—बहुत अच्छा सरकार !

सो०—अरे तो जाकर कहते क्यों नहीं ? यहीं खड़े-खड़े 'बहुत अच्छा सरकार !' बक रहे हो ! [जगदीश जाने को उद्यत होता है।] धीरे-धीरे क्यों जाते हो ? जल्दी जाओ। [चिढ़ कर] इन कम्बख़्तों के मारे [नाराज़ होने की भूल का स्मरण कर डाक्टरों की ओर देखते हुए]······अरे भैया जगदीश ! [जगदीश लौट कर आता है।] कह देना। इतनी जल्दी कहने की ज़रूरत नहीं है, भैया ! क्या करूँ, मेरी तो नाराज़ होने की आदत-सी पड़ गई है।

दास०—शो ठीक होने शाकेगा।

क०—बस, आप ख़त लिख दीजिए। गाने का इन्तज़ाम हो जायगा, इधर हम लोग साथ-साथ दवा देंगे तो बहुत जल्दी आराम हो जायगा।

रूप०—और क्यों डॉक्टर, पेट के दर्द में ऑपरेशन की ज़रूरत तो नहीं पड़ेगी ?

सो०—[चौंक कर] ऑपरेशन······!

क०—नहीं-नहीं, जब मन की बेचैनी मिट जायगी तो पेट का दर्द आपसे आप घट जायगा। आपके सङ्गीत सुनने का इन्तज़ाम जल्द ही होना चाहिए। सेठ साहब·········?

सो०—नहीं-नहीं, मै अभी ख़त लिखता हूँ। [बैठ कर घबराहट में ख़त लिखना चाहते हैं।]

दास०—मन में बेचैनी होने शे बिमारी बाढ़ने शाकता। बाढ़ेगा नेई। हाम दावा भी देगा।

सो०—बस दवा ही दीजिए। ऑपरेशन नहीं, गाना सुनाइए, दवा दीजिए, बस। डॉक्टर कपूर, घबराहट मे मुझसे ठीक नहीं लिखा जाता, आपही मेरी तरफ़ से लिख दीजिए।

क०—हाँ-हाँ, लाइए मैं लिख दूँ। [खत लिखते हैं।]

रूप०—यह सगीत क्या रोज़ रोज़ सुनना पड़ेगा बाबूजी, बड़ी मुसीबत है।

सो०—[बड़े प्रेम से] रूप, अच्छे होने के लिए सुनना ही पड़ेगा। सुन लो बेटा, डॉक्टर लोग कहते हैं। मैं कहाँ कहता हूँ? रूप, सिर्फ़ थोड़े दिन की बात है। फिर तो जिन्दगी भर के लिए अच्छे हो जाओगे।

रूप०—अच्छी बात है। बाबूजी, जैसा कहोगे, करूँगा। आपकी आज्ञा से बाहर तो जा ही नहीं सकता।

सो०—वाह, क्या कहना है। मेरा बेटा रूप! मेरा प्यारा बेटा रूप!!

क०—लीजिए, दस्तख़त कर दीजिए।

सो०—[पढ़ कर] वाह, कितना अच्छा लिखा है डॉक्टर! अब तो वह ज़रूर आ जायगी। [दस्तख़त करता है। कपूर से] वाह, कितना अच्छा लिखा—'मैं उसको अपनी ही बेटी समझूँगा।' आप बहुत अच्छी चिट्ठी लिखते हैं डॉक्टर साहब, क्या डॉक्टरी में ये भी बतलाया जाता है ?

क०—[मुस्कुरा कर] ऐसी कोई बात नहीं। अच्छा, अब इसे भिजवा दीजिए।

सो०—वह मैं अभी भिजवाता हूँ। [पुकार कर] जगदीश !

जग०—[आकर] सरकार !

सो०—देखो, तुम लाला धनपतचन्द का मकान जानते हो ?

जग०—जी सरकार ! जिनका दिवाला निकल गया था ?

सो०—हाँ, वही। जानते हो अब वे कहाँ रहते हैं ?

जग०—जी, करनलगञ्ज में···

सो०—हाँ, वहीं ! यह चिट्ठी उन्हीं के हाथमें देना। ज़रूरी है, समझे।

जग०—जी सरकार !

सो०—जाओ। [जगदीश जाता है।]

सो०—[सन्तोष की साँस लेकर] अब कहीं चैन मिला। अब मेरा रूप बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा, क्यों डॉक्टर ?

क०—अभी कुछ दिन तो लगेंगे, फिर बिल्कुल अच्छे हो जायँगे। बहुत दिनों के लिए !

दास०—[प्रसन्नता से] हामरा डॉक्टरी मामूली हाय !

सो०—नहीं डॉक्टर साहब, आप लोगों ने ही तो रूप को अच्छे करने की तरकीब निकाली है।

क०—अब रूप की बीमारी अच्छी हो जायगी।

रूप०—जब आप लोगों ने मुझे अच्छे करने में इतनी कोशिश की है तो ऐसा लगता है कि मैं अभी से अच्छा होने लग गया हूँ।

सो०—[प्रसन्नता से झूम कर] क्या कहना है ! क्या कहना है !!

[पर्दा गिरता है।]